इकाई 2 प्रारंभिक समाजवादी विचार और मार्क्सवादी समाजवाद

इकाई की रूपरेखा

2.0 उद्देश्य

2.1 प्रस्तावना

2.2 समाजवादी विचार की उत्पत्ति

- 2.2.1 प्रारंभिक समाजवादी विचारक
- 2.2.2 सेंट सिमोन
- 2.2.3 चार्ल्स फूरियेर
- 2.2.4 रॉबर्ट ओवेन
- 2.2.5 प्रूधों

2.3 मार्क्सवादी समाजवाद

- 2.3.1 आर्थिक और सामाजिक विश्लेषण
- 2.3.2 राजनैतिक सिद्धान्त
- 2.3.3 क्रांति का सिद्धांत
- 2.3.4 मार्क्सवाद का प्रभाव

2.4 सारांश

2.5 बोध प्रश्नों के उत्तर

2.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद, आपको निम्नलिखित को करने में सक्षम होना चाहिए :

- समाजवाद की अवधारणा और इसके केन्द्रीय विचारों की व्याख्या करने में;
- समाजवादी विचारों को जन्म देने वाली ऐतिहासिक परिस्थितियों का विश्लेषण करने में;
- समाजवादी विचारों के विकास के मुख्य चरणों को रेखांकित करने में;
- काल्पनिक और जिसे वैज्ञानिक समाजवाद कहा जाता था, के बीच अन्तर करने में;
- सामाजिक और राजनैतिक सिद्धान्त के बारे में मार्क्स के योगदान की चर्चा करने में;
- समाजवादी विचार के विभिन्न रूपों को समझने में;
- समाजवादी विचार से जुड़े कुछ महत्वपूर्ण नामों को सूचीबद्ध करने में; और
- विश्वभर में समाजवादी विचारों के प्रभाव का आकलन करने में।

2.1 प्रस्तावना

आपने अपने यूरोपीय इतिहास के अध्ययन में देखा होगा कि अर्थव्यवस्था और समाज में हुए परिवर्तनों से विचारों और संस्कृति में भी बदलाव आए। आधुनिक अर्थव्यवस्था का उद्भव आधुनिक राजनीति के साथ अविभाज्य रूप से जुड़ा हुआ है और स्वतन्त्रता, समानता और बन्धुत्व जैसी नई अवधारणाओं का जन्म प्रबोधन से संपुटित है। आधुनिक उद्योग के उदय और समाज पर इसके अप्रत्यक्ष प्रभावों से नये बौद्धिक और भावात्मक आग्रह सामने आए।

समाजवादी विचार और समतामूलक समाज के लिए एक तड़प अनेक विचारकों का सरोकार बन गई और फिर इसने समाजवादी आन्दोलनों को प्रेरणा प्रदान की। वे उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी के समाजों और राजनीति के सन्दर्भ में विपक्षी आंदोलन थे।

यद्यपि हम समाजवादी विचारों में पाये जाने वाले कुछ तत्वों को पहले के समय में रेखांकित कर सकते हैं परन्तु आधुनिक समाजवादी विचार और आन्दोलन पूंजीवाद और औद्योगीकरण के सन्दर्भ में उत्पन्न हुए थे और पूंजीवादी समाजों में असमानताओं और अन्याय के खिलाफ प्रतिक्रिया के रूप में विकसित हुए थे। चूंकि पश्चिम यूरोप में पूंजीवाद प्रथम बार विकसित हुआ था इसलिए समाजवादी विचारों के रूप में इसका विरोध भी पहली बार पश्चिम यूरोप में हुआ। समाजवादी आदर्शों पर आधारित पहली क्रांति और समाजवादी आदर्शों को ध्यान में रखते हुए समाज को बदलने का पहला प्रयास 1917 की रूसी क्रांति थी जिसके बारे में आप एक बाद की इकाई में पढ़ेंगे।

समाजवाद के उद्भव के लिए ऐतिहासिक परिवेश आधुनिकता और उससे उत्पन्न असंतोष थे। इसलिए समाजवाद के विचारों ने पूंजीवाद और आधुनिकतावाद दोनों की आलोचना की, लेकिन यह एक ऐसी आलोचना थी जो एक काल्पनिक अतीत की याद नहीं दिलाती थी बल्कि इसने आधुनिक समाजों में जो कुछ सकारात्मक और मूल्यवान था उसी की नींव पर निर्मित एक समतावादी और न्यायपूर्ण भविष्य की ओर देखा। संक्षेप में, समाजवादी विचार ने आधुनिकता की उपलब्धियों और मूल्यों को अस्वीकार नहीं किया, बल्कि यह उसी को बढ़ाना चाहती थी जिसका वायदा आधुनिकता ने किया था या जिसकी परिकल्पना आधुनिकता ने की थी।

समानता, स्वतंत्रता और बन्धुत्व का विस्तार उन लोगों तक किया जाना था जिन्हें समाज के आधुनिक पूंजीवादी ढांचे ने अपने लाभों से बाहर रखा था। यह समाजवादी विचारों और आन्दोलनों की प्रेरक आकांक्षा और लक्ष्य था। समाजवादी विचार और आन्दोलन विविध थे और अपने आप में काफी विभेदीकृत थे, यह एक ऐसा तथ्य है जिस पर बहुत अधिक टिप्पणी नहीं की गई है। न केवल वे समय के अनुसार भिन्न थे और उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दियों के अलग-अलग परिवेश के अनुसार भिन्न थे बल्कि यूरोप और औपनिवेशिक देशों के विभिन्न इलाकों में, वे उन्नीसवीं शताब्दी और यूरोप के भीतर भी काफी अलग थे। सामाजिक न्याय की खोज ने तीखी बहसों और विचारों और रणनीतियों को और एक व्यवस्था और समाज के रूप में समाजवाद की परिभाषाओं और मंसूबों को जन्म दिया।

मोटे तौर पर, जैसा कि शेरॉन कोआलस्की ने एक सारगर्भित निबन्ध में बताया है, ''आधुनिक समाजवाद की दो विशिष्ट धाराएँ विकसित हुई। एक शाखा ने समाजवादी उन्मुख सुधारों को बढ़ावा देने और लागू करने के लिए स्थापित व्यवस्था के भीतर काम करने पर ध्यान केन्द्रित किया जो श्रमिक वर्गों की स्थितियों में सुधार करता जबकि दूसरे मार्ग ने क्रांतिकारी परिवर्तन की आवश्यकता पर ध्यान केन्द्रित किया।'' इसने राज्य और सत्ता की मौजूदा पूंजीवाद संस्थाओं में सीमित सम्भावनाओं पर बल दिया और उन्हें एक क्रांति के माध्यम से नष्ट करने का तर्क दिया (कोआलस्की इन वन्दना जोशी, पृ. 190)। आधुनिक समाजवाद भावना में अन्तर्राष्ट्रीयतावादी था और समाजवादी आन्दोलन के नेता लगातार इस पर बल देते रहे कि दुनियाँ भर में उत्पीड़ित लोगों के हित परस्पर जुड़े हुए थे और एक जैसे थे और इसी तरह शासक वर्गों के हित भी सभी जगह एक समान थे, जो सभी के लिए लाभ के विस्तार के विपरीत विशेषाधिकारों की रक्षा में अन्तर्निहित थे। वे संगठन बनाने वाले पहले व्यक्ति थे जिनका स्वरूप अन्तर्राष्ट्रीय था या जो अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर जुड़े हुए थे, भले ही उन्होंने अपनी राष्ट्रीय सीमाओं के भीतर की काम किया था (वहीं पर)।

समाजवादी विचारों और आन्दोलनों ने आधुनिक समाजों में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और उन्होंने पूंजीवाद और उसके अन्याय के विरूद्ध महत्वपूर्ण ऐतिहासिक सन्धिस्थल निर्मित किए। इस इकाई में हम आपको प्रारंभिक समाजवादी विचारों और कुछ प्रमुख प्रारंभिक समाजवादी विचारकों से परिचित कराएंगे और फिर हम मार्क्सवादी विचारों के विभिन्न पहलुओं और समाजवादी क्रांति के रूप पर इसके प्रभावों की चर्चा करेंगे।

2.2 समाजवादी विचार की उत्पत्ति

यह ज्ञात नहीं है कि किसने सबसे पहले 'समाजवाद' और 'समाजवादी' शब्दों का इस्तेमाल किया था। 1800 के आसपास इंग्लैंड और फ्रांस दोनों में पूंजीवाद की 'बुराइयों' के बारे में लिखा गया और सार्वजनिक क्षेत्र में पत्रिकाएँ, पुस्तकें और भाषण दिखाई पड़ते हैं। लेकिन 'समाजवाद' शब्द को 1832 में एक फ्रांसीसी पत्रिका ले ग्लोब की छपाई में देखा गया था। समाजों में अन्याय की आलोचना और बेहतर दुनियाँ के लिए आकांक्षाएँ प्राचीन समय से रेखांकित की जा सकती हैं, लेकिन समाजवादी विचार जैसा हम जानते हैं वह पूंजीवाद और इसके उत्पीड़न के रूपों का एक उत्पाद है। समाजवादी विचारों में पूंजीवाद का एक विशिष्ट विश्लेषण महत्वपूर्ण है। उदाहरण के लिए अरस्तु और प्लेटो अपने समाजों के महत्वपूर्ण आलोचक थे लेकिन अरस्तू ने दासतां को उचित ठहराया और प्लेटो के लिए समानता की परिकल्पना यूनानी समाज में विशेषाधिकार की सीमा के भीतर ही की गई थी। मध्यकाल में समानता और स्वतंत्रता के लिए सहस्राब्दिक इच्छाएँ थी और प्रारंभिक आधुनिक समाज में अनाबेपटिस्टों ने स्थापित चर्चा और उसके द्वारा स्वीकृत समाज के खिलाफ प्रतिरोध का प्रतिनिधित्व किया लेकिन यह केवल आधुनिक विश्व में ही था कि समानता की एक ऐसी अवधारणा विकसित हुई जो धर्मनिरपेक्ष थी और विश्व के सभी उत्पीड़ितों के लिए बोली जाती थी, और राज्यों और राज्य व्यवस्थाओं को स्थापित करने के लिए खाके तैयार किये गये जो न्याय और समानता सुनिश्चित करते थे।

आप आश्चर्यचकित हो सकते हैं कि क्यों समाजवादी विचार इतिहास में एक खास अवस्था में आकर व्यवहारिक हो गये और उन्होंने मजबूती से अपनी जड़ें जमा ली, इस तथ्य के बावजूद कि एक बेहतर दुनिया के लिए इच्छा काफी पुरानी थी। मार्क्स और एगेंल्स का स्पष्ट मत था कि समाजवादी समाज के लिए विचार और परिस्थितियों पूंजीवाद द्वारा निर्मित की गई थी। जब कोई समस्या मौजूद होती है तो तभी मानवता उसके बारे में सोच सकती है : केवल पूंजीवाद की कार्यप्रणाली इस तरह के विचारों को पैदा कर सकती थी जो इसको अन्याय को चुनौती दे सकते और उसे दूर कर सकते थे। उदाहरण के लिए, चन्द्रमा पर जाना केवल एक सपना हो सकता है जब तक कि ज्ञान, प्रौद्योगिकी और संसाधन इसे एक वास्तविक संभावना नहीं बना देते। इसी प्रकार समाजवादी विचार पहली बार बढ़े हुए उत्पादन और संसाधनों के सन्दर्भ में व्यापक हो सकते थे हांलाकि जैसाकि उन्होंने बार-बार बताया। इस फल को खोजने के लिए अन्य कारक भी आवश्यक थे अन्यथा उत्पादन और ज्ञान की प्रचुरता के बिना शिक्षा, स्वास्थ्य और अवकाश सभी के लिए कैसे संभव हो सकता है।

संक्षेप में, मानवजाति के बेहतरी के लिए विचार तभी से मौजूद थे जबसे मनुष्य अस्तित्व में आया और सोच विचार करने में सक्षम हुआ लेकिन समाजवाद के विचार केवल उन्नीसवीं शताब्दी में फैक्टरी उत्पादन की वृद्धि और कृषि उत्पादन में वृद्धि के साथ ही उभर सकते थे। समाजवादियों ने स्वतंत्रता के विचारों की पूर्व विरासत पर एक समतावादी और न्यायपूर्ण समाज की दृष्टि का निर्माण किया।

2.2.1 प्रारंभिक समाजवादी विचारक

पहली आधुनिक समाजवादी हलचल को, फ्रांसीसी क्रांति के क्रांतिकारी युग में डायरेक्टरी के शासन के दौरान, जिसने 1793 के संविधान को समाप्त कर दिया था, उसको उखाड़ फेंकने के लिए फ्राकोंइस नोएल बाबेफ (1760-1797) द्वारा संगठित समानता के षड़यंत्र से रेखांकित किया जा सकता है। वह प्रबोधन काल के प्राकृतिक अधिकारों की वकालत से प्रेरित था और उसने यहाँ तक तर्क दिया कि सामाजिक समरसता और प्रसन्नता सामजिक समानता और निजी सम्पत्ति के उन्मूलन से ही उभर सकती हैं। वह स्वतंत्रता की धारणाओं में एक अन्तर दिखाने वाले पहले व्यक्ति थे। यानि एक स्वतंत्रता वह जिसमें मेहनतकश गरीबों की अनुमति थी और दूसरी स्वतंत्रता वह जो समानता द्वारा इसका अन्त करने वाली थी। उन्हें सरकार द्वारा मई 1797 में मृत्यु दंड दिया गया था।

इंग्लैंड में राबर्ट ओवेन और फ्रांस में चार्ल्स फूरियेर को उन्नीसवीं शताब्दी की शुरुआत के अग्रणी समाजवादियों के रूप में देखा जा सकता है क्योंकि उनके इर्द-गिर्द आन्दोलनों का विकास हुआ जिन्होंने उनके विचारों को लागू करवाने की कोशिश की। क्लॉड हेनरी डी. सेन्ट सिमोन, पियरे जोसेफ प्रूधों, एटीऐन केबेट, लुई ऑगस्ट ब्लांकुई अन्य प्रसिद्ध नाम थे। उनकी पुस्तकें व्यापक रूप से पढ़ी गई और उनके विचारों को पर्चों के माध्यम से प्रचारित किया गया और उन पर प्रेस में बहस हुई। उनके भाषणों ने भारी तादाद में श्रोताओं को आकर्षित किया और संयुक्त राज्य अमेरिका में भी उनका कुछ प्रभाव देखा गया। उनकी प्रगति उन गतिविधियों से परे थी जिनकी परिकल्पना बाबेब ने की थी। उन्होंने पूंजीवाद समाज की एक व्यापक आलोचना प्रस्तुत की और परिणामस्वरूप उनमें से प्रत्येक ने विस्तार से यह स्पष्ट किया कि आदर्श रूप में समाज कैसा होना चाहिए। फ्रांसीसी प्रबंधन काल के विचारकों के विपरीत उनके लिए समानता में सामाजिक और आर्थिक समानता का सम्मिलित होना आवश्यक था : कानूनी समानता और धर्म और अभिभाषण की स्वतंत्रता एक न्यायपूर्ण समाज के लिए पर्याप्त नहीं थे। वे इस बात से संतुष्ट नहीं थे कि सभी को नागरिक माना जाना चाहिए क्योंकि वे अपने समय में विद्यमान वर्ग-भेदों के उन्मूलन की इच्छा रखते थे।

उनको इतिहास के दीर्घकालीन रूप की दृष्टि थी और उन्होंने पूंजीवाद को इतिहास के एक चरण के रूप में देखा था जिसको स्थाई होने की आवश्यकता नहीं थी और जो चिरस्थाई नहीं हो सकता था क्योंकि यह एक अन्यायपूर्ण और पोषण आधारित व्यवस्था थी जो असंगत विरोधाभासों और टकरावों द्वारा परिलक्षित होती थी। वे निजी सम्पत्ति को मुनाफे और शोषण की नींव के रूप में देखते थे और सभी उत्पादक संसाधनों के साझा या सामाजिक स्वामित्व की दृढ़ता से वकालत करते थे। इस कारण से हम उन्हें लोकप्रिय हिंसा या विद्रोह द्वारा व्यवस्था के क्रांतिकारी सता पलट की वकालत नहीं करने के बावजूद, समाजवादी मानते हैं।

वे हांलाकि उस अवधि से सम्बन्धित थे जब पूंजीवाद उभर रहा था और इसके विरोधाभास पूरी तरह विकसित नहीं हुए थे और इसके भीतर अपरिहार्य संकट स्पष्ट नहीं थे। श्रमिक आन्दोलन अभी भी अपनी बाल्यावस्था में था और पूंजीपति वर्ग ने भी अनेक वह तरीके प्रकट नहीं किये थे जिनके द्वारा वह समाज और राजनीति पर हावी हो सकता था इसलिए उन्होंने यह परिकल्पना की कि परिवर्तनकारी नीतियों और एक सही प्रतिनिधित्व आधारित व्यवस्था से पूंजीवाद समाजवाद में बदल सकता था और इसका सारतत्व बदल सकता था। उनके सिद्धांत और कार्यक्रम इस प्रकार पूंजीवाद की अविकसित अवस्था के प्रतिबिंब थे। और उन्होंने हृदय परिवर्तन तर्क की शक्ति और एक नई नैतिकता के विकास पर बहुत जोर दिया। जो एक नई ओर उचित शिक्षा के माध्यम से, निरंतर प्रचार के माध्यम से और

उन प्रतिमान प्रयोगों के उदाहरणों के द्वारा प्राप्त की जा सकती थी जिनकी उन्होंने अपने जीवन काल के दौरान लागू करवाने की कोशिश की थी। उनके विचार का एक प्रमुख मूल्यांकन मार्क्स और एंगेल्स के द्वारा उन्नीसवीं शताब्दी में किया गया था जिन्होंने उनके विचारों में निहित उत्पीड़ित वर्ग के लिए सरोकार और सामाजिक और आर्थिक समानता और सरगर्मी को पहचाना लेकिन उन्होंने उनके द्वारा समाज के भौतिक आधार को श्रेय देने की विफलता की भी आलोचना की जिन्होंने समानता प्राप्त करने के लिए परिस्थितियों को निर्माण किया था। उत्पादक संसाधनों के पर्याप्त विकास के बिना, सभी के लिए पर्याप्त और समान रूप से वितरित करने के लिए प्र्याप्त संसाधन नहीं होंगे। इसलिए, इस समालोचना के बाद से उन्हें काल्पनिक समाजवादी कहा जाने लगा।

2.2.2 सेंट सिमोन

सेंट सिमोन ने इतिहास के विभिन्न चरणों, बर्बरता से पूंजीवाद तक, समग्र समाज में प्रगति की अनिवार्यता और न्यायपूर्ण समाज के लिए समाजवाद की आवश्यकता को मान्यता दी। वह यह भी अध्ययन करना चाहते थे कि इतिहास के माध्यम से समाज कैसे विकसित और परिवर्तित हुआ था और उन्होंने समाज के पुनर्गठन और सम्पदा के पुनर्वितरण और इसे सुनिश्चित करने के लिए योजना की आवश्यकता की वकालत की। उन्होंने समाज का विश्लेषण दो मुख्य वर्गों, 'निष्क्रिय मालिकों' और 'मेहनतकश लोगों' के रूप में किया। मेहनतकश लोगों में उनके लिए सिर्फ किसान और कारीगर ही नहीं, बल्कि मजदूरों का शोषण करने वाले अमीर कारखानों के मालिक भी शामिल थे। आश्चर्य की बात नहीं है कि उनका जोर उत्पादन के साधनों में निजी सम्पत्ति को खत्म करने पर नहीं था, बल्कि केवल इसके दुरूपयोग का था जिसे वे न केवल वांछनीय बल्कि पूंजीवादी व्यवस्था के अन्तर्गत संभव भी मानते थे। संक्षेप में उनके अनुसार ह्रदय परिवर्तन संपदा और संपत्ति के दुरूपयोग को रोक सकता था ताकि सभी लोग संसाधनों का उपयोग कर पाते।

2.2.3 चार्ल्स फूरियेर

चार्ल्स फूरियेर में पूंजीवादी समाज की अधिक व्यापक आलोचना थी जिसमें महिलाओं की स्थिति भी शामिल थी। उन्होंने एक कदम आगे बढ़कर तर्क दिया कि कुछ लोगों के हाथों में सम्पदा का होना पूंजीवादी समाज में बहुसंख्यकों की गरीबी का कारण था। उनकी इतिहास के विभिन्न चरणों के बारे में दृष्टि इस मान्यता के साथ थी कि हर चरण का अपना उत्थान और पतन का समय था और उनका उद्देश्य ''सामाजिक गति के नियमों'' की खोज करना था जैसा कि अन्य वैज्ञानिकों ने ब्रह्माण्ड के ''भौतिक गति के नियमों'' की खोज की थी। सबसे महत्वपूर्ण बाल यह है कि उन्होंने इतिहास के प्रत्येक चरण को उस समाज में उत्पादन की स्थिति से जोड़ा और ऐसा करके मार्क्स द्वारा शुरू की गई सामाजिक आर्थिक गठन की अवधारणा का मार्ग प्रशस्त किया।

2.2.4 रॉबर्ट ओवेन

रॉबर्ट ओवेन ने समाज की भौतिक परिस्थितियों पर अधिक बल दिया और तर्क दिया कि मनुष्य केवल वंशानुगत विशेषताओं का ही नहीं बल्कि उसके परिवेश और उसके आसपास के विकसित हो रहे समाज का भी एक उत्पाद है। उन्होंने औद्योगिक विकास के महत्व को पहचाना जो ऐसी प्रचुरता का निर्माण करेगा जिसमें केवल कुछ ही नहीं बल्कि पूरा समाज पनप सकेगा। उनकी दृष्टि प्रचुरता से भरे ऐसे समाज की थी जहाँ सम्पत्ति सार्वजनिक हो और सभी के भले के लिए काम करती हो। उन्होंने समझा कि उनके समय में मजदूर को उत्पादन में लगाए गये श्रम से बहुत कुछ नहीं मिल रहा था जो कारखानों के मालिकों को मिल रहा था। उनके अनुसार यह सब मुद्रीकरण का परिणाम था। उन्होंने हांलाकि इसकी

क्रियाविधि का विश्लेषण नहीं किया। उन्होंने सोचा था कि कारखानों के मालिकों को अपने कारखानों की सहकारी समितियाँ बनानी चाहिए और उनके उत्पादन का अधिक से अधिक न्यायसंगत वितरण सुनिश्चित करना चाहिए। वह खुद एक कारखाने का मालिक था और उसने एक ऐसा सहकारी प्रतिमान बनाया जिसके द्वारा उसने यह दिखाने की कोशिश की कि मुनाफे के नुकसान के बिना श्रमिकों के लिए एक निश्चित जीवन स्तर कायम रखा जा सकता था। उनका लक्ष्य मौजूदा समाज के विघटन की बजाय सामाजिक 'समरसता' था और उनके अनुयायियों ने भी श्रम के अनुसार वस्तुओं के वितरण की माँग की और वे संसाधनों में निजी संपत्ति के आलोचक थे।

2.2.5 प्रूधों

प्रूधों इसके विपरीत निजी संपत्ति को 'चोरी' के रूप में देखता था जो समाज के पुराने रूपों में साझा अधिकारों के हड़पने से संचित की गई थी। उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि असमानता उत्पादन में आगत के असमान मूल्य द्वारा निर्मित किया गया था : श्रम का अवमूल्यन किया गया था जबकि, उद्यम के स्वामित्व को अधिक मूल्य दिया गया था। वह छोटे संपत्ति के मालिकों के प्रति सहानुभूति रखता था जिनके पास दूसरों के श्रम का शोषण करने की क्षमता नहीं थी और उनको राज्य सत्ता में अविश्वास था जिसे उन्होंने अमीरों के हितों के पक्ष में देखा। अन्य विचारक भी थे जिन्होंने समाजवादी विचारों की वकालत की थी। केबेट ने संघर्ष के क्रांतिकारी तरीकों का समर्थन नहीं किया, समानता पर जोर दिया और माना कि यह समानता समाज में सामंजस्य और कारीगरों के छोटे उत्पादन के माध्यम से प्राप्त की जा सकती थी। उनके लिए वह साम्यवाद का एक रूप था। ब्लॉक्वी ने क्रांति की आवश्यकता पर जोर दिया और समाजवाद के लिए एक पूर्व शर्त के रूप में राज्य सत्ता को उखाड़ फेंकने की बात कही। लेकिन वह मानते थे कि यह केवल अभिजात्य प्रतिबद्ध समूहों की टोलियों द्वारा षड्यन्त्रकारी हिंसक तरीकों के माध्यम से किया जा सकता था और उन्हें लोकप्रिय संघर्षों पर भरोसा नहीं था क्योंकि वे उनके अनुसार अनभिज्ञ और ज्ञान और शिक्षा से रहित थे।

प्रारंभिक समाजवादियों के इन व्यक्तिगत विचारों में ऊपर वर्णित सामान्य सूत्र थे जो उन्हें 'काल्पनिक समाजवादियों' के रूप में परिलक्षित करते हैं। ऐसा उन्होंने स्वयं को खुद परिभाषित नहीं किया बल्कि अन्य द्वारा कहा गया जिन्होंने उनकी सोच और गतिविधियों का विश्लेषण किया।

बोध प्रश्न 1

1) समाजवादी विचारों को जन्म देने वाली परिस्थितियों के बारे में संक्षेप में लिखिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

2) आप काल्पनिक समाजवादी से क्या समझते है? प्रारंभिक समाजवादी विचारकों पर टिप्पणी लिखिए।

....

....

....

....

....

....

2.3 मार्क्सवादी समाजवाद

मार्क्सवाद समाजवादी विचारधारा की धारा थी जिसने उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में सार्वजनिक दृश्यता प्राप्त की और उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध में अपनी क्षमता दिखाई जो जल्द ही उभरते श्रमिक आन्दोलनों और उन्नीसवीं सदी के अन्त और प्रारंभिक बीसवीं सदी में समाज के अन्य विभिन्न वर्गों से जुड़ गई और उनको प्रभावित करने लगी। इसकी पहली सार्वजनिक अभिव्यक्ति 1848 में प्रकाशित कम्युनिस्ट घोषणापत्र थी। आज यह 'दुनिया में सबसे अधिक पढ़े जाने वाली और प्रसारित होने वाली पुस्तकों में से है'। काल्पनिक समाजवाद के मामले की तरह इस प्रवृत्ति को मार्क्सवाद के रूप में केवल बाद में विभिन्न सामाजिक वैज्ञानिकों और राजनैतिक विचारकों के विश्लेषणों में जाना गया। जब इस प्रवृत्ति को सब से प्रमुख क्रांतिकारी व्यक्ति ने अपने समय के विचारों को एक सुसंगत ढ़ाचाँ प्रदान किया। कार्ल मार्क्स ने कुछ विचारों को स्वीकार किया और कुछ की आलोचना करके उन्हें अस्वीकार कर दिया। कार्ल मार्क्स (1818-1883) और उनके मित्र और सहयोगी फ्रेडरिक एंगेल्स (1820-1895) क्रांतिकारी समाजवादी प्रवृत्ति के संस्थापक थे जिसे बाद में मार्क्सवाद के रूप में जाना गया। उनकी पुस्तकों का कई भाषाओं में अनुवाद हुआ।

मार्क्स और एंगेल्स ने अपने विचारों को शून्य से विकसित नहीं किया। उन्होंने जर्मन दर्शन, अंग्रेजी राजनैतिक अर्थव्यवस्था और फ्रांसीसी समाजवाद के महानतम् प्रतिनिधियों की शिक्षाओं और विचारों को समाहित किया और आगे विकसित किया और एक नये तरीके से एकीकृत किया। उन्होंने लुडविग फायरबाक, हेगेल और काल्पनिक समाजवादियों से ग्रहण किया और रिकार्डो, फिजियोक्रेटस और एडम स्मिथ के लेखन पर बहुत ध्यान दिया। 1848 में मार्क्स और एंगेल्स ने कम्युनिस्ट मैनिफेस्टो में दर्शन, इतिहास और राजनीति की अपनी समझ को एक लोकप्रिय रूप दिया और इस व्यापक समझ के आधार पर मुक्ति के व्यवहारिक राजनीतिक कार्यक्रम को तैयार किया।

कम्युनिस्ट घोषणापत्र उन्नीसवीं सदी की राजनीति की दुनियां में एक वज्रपात की तरह आया। इसका तात्कालीक सम्पर्क 1830 की क्रांति के दौरान श्रमिकों द्वारा अवरोधों को तोड़ने के साथ हुआ और जल्द ही समाजवादियों द्वारा यह एहसास हुआ कि यूरोपीय पूंजीपति उन लोगों का साथ देने की बजाए जो एक क्षमतावादी और न्यायसंगत समाज के लिए लड़ रहे थे, स्थापित शासनों का समर्थन करेंगे। यह क्रांति का आहवान था। यह एक राजनैतिक पुस्तिका थी जो जर्मन श्रमिकों की पार्टी कम्युनिस्ट लीग के लिए लिखी गई थी। अपने जीवन के दौरान यह मार्क्स के विचारों का पूरा दस्तावेज नहीं है फिर भी यह एक भ्रूण है और केप्सूल रूप में उनके विचार का मूल और क्रांति और ऐतिहासिक विचार का खाका है। इसका शुरुआती बिन्दू उन्नीसवीं शताबदी के मध्य में पूंजीवाद का विश्लेषण है, यह भविष्य में इसके विकास की प्रवृत्तियों को रेखांकित करता है और क्रांति की आवश्यकता और श्रमिकों की अग्रणी भूमिका और वर्ग संघर्षों की प्रकृति और पूंजीवाद

को उखाड़ फेंकने और समाजवाद की स्थापना के लिए तर्क देता है। यह अन्य समाजवादी रूझानों की भी आलोचना करता है और श्रमिक वर्ग के लिए एक राजनैतिक दल के महत्व की वकालत करता है। यह तीन महत्वपूर्ण सूत्रीकरण करता है : कि अभी तक का सभी इतिहास वर्ग संघर्ष का इतिहास रहा है और आगे भी रहेगा; कि दुनियां के मजदूरों को एक जुट होने की जरूरत है (समानता और मुक्ति के लिए लड़ाई की अन्तर्राष्ट्रीय प्रकृति); कि मौजूदा वर्गों के बीच में श्रमिक सबसे अधिक क्रांतिकारी हैं क्योंकि उनके पास स्थापित व्यवस्था में दाँव पर कुछ नहीं है ('उनके पास खोने के लिए अपनी जंजीरों के सिवा कुछ नहीं है'); कि समाजवाद भविष्य के समाज और ऐतिहासिक विकास की दृष्टि है; कि मनुष्यों की आलोचनात्मक सोच का उद्देश्य सिर्फ दुनियां की व्याख्या करना नहीं है बल्कि सभी की बेहतरी के लिए उसे बदलना है।

कम्युनिस्ट मेनीफेस्टो उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्वार्ध में मार्क्स के विचारों का एक परिणाम था और बाद में उनके आगे परिष्करण और विकास के बाद 1848 की क्रांति के बाद वैचारिक आधार बन गया। मेनीफेस्टो ''दोनों पुरानी समाजवादी परंपराओं पर आधारित था और उन्हें तोड़ता भी है, इस प्रकार यह साम्यवाद को एक विशिष्ट राजनैतिक आन्दोलन के रूप में स्थापित करता है और उसके राजनैतिक एजेन्डें को स्थापित करता है (कोआलस्की, पृ. 200)। इस अर्थ में मार्क्स के विचारों ने समाजवादी आन्दोलनों के दायरे और दिशा को परिभाषित करने में एक केन्द्रीय भूमिका निभाई।

मार्क्स के लिए, भौतिक जीवन का विकास इतिहास को समझने का आधार था और द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद इसका दर्शन था। भौतिकवाद के साथ-साथ द्वन्द्ववाद मार्क्सवाद के मूल में था। उस दृष्टिकोण से, ऐतिहासिक भौतिकवाद और राजनैतिक अर्थव्यवस्था का एक नया विश्लेषण, दुनिया की लोगों की समझ के लिए मार्क्स का केन्द्रीय और विलक्षण योगदान बन गया।

2.3.1 आर्थिक और सामाजिक विश्लेषण

ऐतिहासिक भौतिकवाद के सूत्रीकरण में मार्क्स का शुरुआती बिन्दू जर्मन दार्शनिक लुडविक फायरबाख द्वारा मुखर किया गया विचार है : 'वास्तविकता विचारों को आकार देती है और विचार भौतिक परिस्थितियों को प्रतिबिंबित करते हैं'।

दार्शनिक रूप में मार्क्सवाद ने जीवन और इतिहास पर एक भौतिकवादी दृष्टिकोण अपनाया। मार्क्स ने इसे इस प्रकार स्पष्ट किया : यह कि जिस तरह लोग अपने जीवन की आवश्यकताओं का उत्पादन करते हैं और जिस तरह से वे इसे करने के लिए अपने श्रम को संगठित करते हैं, वह उनके समाज और राजनैतिक ढांचे के निर्माण के तरीके को निर्धारित करते हैं और अन्ततः उनके सोचने के तरीके को भी। संक्षेप में, यह अस्तित्व है जो चेतना को निर्धारित करता है और इसके विपरीत नहीं, क्योंकि एक चीज स्वतंत्र रूप से मौजूद रहती है और इससे पहले भी कि लोग इसके बारे में क्या सोचते हैं। उदाहरण के लिए एक पेड़ मौजूद था इसलिए लोगों ने इसे देखा, पहचाना और इसका अध्ययन किया और इसे एक नाम दिया। अगर उन्होंने ऐसा नहीं किया होता तो भी यह अस्तित्व में होता। मानव इतिहास पर लागू करते हुए, मार्क्स ने तर्क दिया कि इतिहास के विशेष चरण को जो निर्धारित करता था वह था उत्पादन की प्रचलित पद्धति और समाज में उत्पादन के संबंध। दासता, सामंतवाद और पूंजीवाद ने विभिन्न सामाजिक आर्थिक गठनों, विभिन्न वर्ग संबंधों और विचार के विभिन्न प्रमुख तरीकों का प्रतिनिधित्व किया। उनके अनुसार, ये घटनाक्रम यांत्रिक और पूर्व निर्धारित नहीं थे (फायरबाख के विचार के विपरीत)। इस भौतिक विकास के केन्द्र में मानव थे जिन्होंने अपने श्रम, अपने विचारों अपनी गतिविधियों के माध्यम से इतिहास के परिणाम निर्धारित किये।

यह सिर्फ अस्तित्व नहीं है जिसके द्वारा एक तरफा प्रक्रिया में चेतना निर्धारित होती है; मानवीय क्रियाएँ किसी भी समाज के भौतिक जीवन में एक महत्वपूर्ण समीकरण थी; इसलिए जब मानव अपने समाज के विकास की सीमाओं से घिरा हुआ है तब भी इतिहास को बनाने और संचालित करने वाला मनुष्य ही है। जब उन्होंने मनुष्य कहा तो इसका उपयोग मानव के लिए, महिलाओं और पुरुषों दोनों के लिए किया, यह ध्यान दिया जाना चाहिए। उनके विचार की योजनाओं में महिलाएँ समान थी। अग्नि उपकरण, पशुओं को पालना और कृषि सहज रूप से इससे जुड़े हुए थे कि लोग प्रकृति के साथ क्या करते हैं। परिवार, जनजाति और अन्य सामाजिक संगठन श्रम से जुड़े हुए थे और इससे जुड़े थे कि कैसे मानव श्रम के माध्यम से पारस्परिक संबंध बनाते हैं। परिवर्तन इस प्रकार इतिहास की एक सतत् और निरंतर विशेषता थी जिसे भौतिक जीवन के विकास से सहायता मिलती थी। परिवर्तन ने आवश्यक रूप से प्रकृति और मनुष्यों के एक दूसरे के साथ समीकरणों को बदल दिया। परिवर्तन इस प्रकार वास्तविकता का एक मात्र स्थाई तथ्य था।

लेकिन बदलाव के लिए और परिवर्तन के एजेंट के रूप में कार्य करने के लिए परिस्थितियों को बनाने में किसका योगदान था? उनका तर्क था कि यह समाजों के भीतर टकराव और विरोधाभास थे जो हर बड़े बदलाव के साथ उत्पन्न होते थे। इतिहास कभी रैखिक रूप से विकसित नहीं हुआ; यह हमेशा द्वन्द्वात्मक गति की प्रक्रिया थी। इतिहास की शुरुआत से ही मानव ने प्रकृति के अन्दर कार्य किया और प्रकृति के साथ टकराव और साझेदारी में काम किया; और समय के साथ समाजों के भीतर, अन्य मनुष्यों के सहयोग और विरोध में प्रगति इस प्रकार द्वन्द्वात्मक प्रक्रिया थी।

परिवर्तन को अन्तर्विरोधों द्वारा पैदा किया गया था जिसके कारण वर्ग संघर्ष हुए। इस प्रकार वर्ग संघर्ष ऐतिहासिक विकास के आधार थे। वे वास्तव में इस कठोर वास्तविकता का परिणाम थे कि आदिम साम्यवाद के बाद से हर समाज में, कुछ लोग विशेषाधिकार प्राप्त थे और शासक वर्ग बन गये और अन्य लोग वंचित, उत्पीड़ित और शासित वर्ग थे। असमानता तार्किक आधार था जिसने वर्ग संघर्षों को जन्म दिया। आय या संपदा के स्रोतों से संबंधों के आधार पर उत्पन्न असमानता चाहे वे उनके स्वामित्व में हों और दूसरों को काम पर लगाकर प्राप्त किये गये, और चाहे वे उन पर काम करें और उनके लिए मुनाफा या अधिशेष का उत्पादन करें। स्वाभाविक रूप से दो प्रकार के लोगों के हित विरोधी और असंगत थे, जिसने वर्ग संघर्षों को अपरिहार्य बना दिया था हांलाकि इसके परिणाम हर समय और सभी चरणों में एक जैसे नहीं थे क्योंकि उनकी सापेक्ष शक्ति इतिहास में भिन्न-भिन्न रही थी।

एंगेल्स ने *'ओरिजिन ऑफ फेमिली, प्राइवेट प्रापर्टी एंड द स्टेट'* नामक एक रचना लिखी जो ऐतिहासिक विकास के प्रारंभिक चरणों में प्रक्रिया का वर्णन करती है। अपने समय में पूंजीवाद के व्यापक विश्लेषण से ये अवलोकन मार्क्स को प्राप्त हुए।

2.3.2 राजनैतिक सिद्धान्त

कई वर्षों में तीन खंडों में लिखी गई अपनी प्रमुख रचना दास केपिटल में मार्क्स ने स्वयं अपने राजनीति पर विचारों का विस्तार किया। इन खण्डों में प्रमुख विषयवस्तु पूंजीवाद और उसमें निहित तत्वों का विश्लेषण थी : वर्ग शोषण जो इसमें अन्तर्निहित था; वर्ग संघर्ष जो इस शोषण का तार्किक परिणाम था; संचय और संकट की प्रवृत्ति वो दोनों इससे उत्पन्न हुई थी और व्यवस्था में निहित इन तत्वों के आधार पर पूंजीवाद का इतिहास। एंगेल्स ने इस अध्ययन में *'Condition of the Working Class in England'* नामक रचना द्वारा सहयोग दिया।

ये रचनाएँ पूंजीवादी समाज की सम्पूर्ण और तीखी आलोचना थी, विशेषरूप से, उसके उस तरीके की जिसके परिणामस्वरूप मजदूर वर्ग का शोषण हुआ और उसका स्वयं की रचनात्मकता और स्वयं से अमानवीकरण और अलगाव पैदा हुआ। उन्होंने दिखाया कि पूंजीवाद के तहत् श्रमिक दिन का एक भाग अपने और अपने परिवार को बनाए रखने (मजदूरी) पर लगाता है जबकि शेष दिन वह बिना पारिश्रमिक के काम करता है क्योंकि अब वह उसके उत्पादन में समय लगाता है जिसके लिए उसे भुगतान नहीं किया जाएगा। इसके माध्यम से वह एक अधिशेष मूल्य का निर्माण करता है जो पूंजीपति के लिए मुनाफे का स्रोत है और जिसके माध्यम से श्रमिक को उसके श्रम के पूर्णफल से वंचित किया जाता है। श्रमिक इसको रोक नहीं सकता क्योंकि वह जो बेचता है वह है उसका श्रम। अपने सहश्रमिकों के साथ सामूहिक रूप से दिन के अन्त में वह जितना उत्पादन करता है उसका मूल्य उस उत्पाद का उत्पादन करने की लागत—जिसमें कच्चे माल, मशीनरी, रख-रखाव और उद्यम को चलाने की लागत और उसको दी गई मजदूरी का भुगतान आदि पर निवेश शामिल होता है, उससे अधिक होता है। इस प्रकार, पूंजीवाद ना केवल एक आर्थिक प्रणाली है बल्कि जैसा मार्क्स ने दर्शाया यह पूंजीपति और श्रमिक के बीच संबंधों का एक विशिष्ट समुच्चय है, जो श्रमिकों के हितों के खिलाफ है और सामाजिक रूप से अन्यायपूर्ण और शोषणकारी है। श्रम उत्पादन प्रणाली का आवश्यक हिस्सा है क्योंकि श्रम के बिना कुछ भी उत्पादन नहीं किया जा सकता है : भूमि, मशीनरी, पूंजी (धन) काम करने वाले श्रमिक के बिना बेकार हो जायेंगे। और एक पूंजीवादी कारखाना प्रणाली में एक श्रमिक अकेले उत्पादन नहीं कर सकता है और ना ही वह उसे बेच सकता है जो कारखाने के मालिक की मशीनरी और पूंजी निवेश के माध्यम से सामूहिक रूप से उत्पादित किया गया है। इसलिए जैसा कि मार्क्स ने कहा आवश्यक रूप से श्रम का एक निश्चित सामाजिक संगठन है। लेकिन श्रम के इस सामाजिक संगठन पर पूंजी या संपदा (उत्पादन का एक प्रमुख और बुनियादी घटक) हावी होता है जिसका स्वामित्व पूंजीपति के पास है और श्रमिक के पास नहीं है।

पूंजी के उपयोग के पैमाने में वृद्धि और मशीनीकरण ओर मशीनरी के उपयोग से उत्पादन में भारी वृद्धि होती है। लेकिन श्रमिक को घंटे के हिसाब से भुगतान किया जाता है, वह कुछ घंटों के लिए अपना श्रम बेच देता है; भले ही उस समय में वह कितना भी उत्पादन कर सकता हो। उसे बाजार में मूल्य के रूप में घंटे के हिसाब से भुगतान किया जाता है (यानि जिस कीमत पर उसकी श्रम शक्ति का विक्रय होता है) जबकि वह जो उत्पादन करता है वह उत्पाद के उत्पादन में होने वाली लागत के साथ-साथ उसको श्रम किये गए श्रम शक्ति के भुगतान से कई गुना अधिक होता है। मार्क्स ने अपने मूल्य और आधिशेष मूल्य की इस खोज कि यह श्रम द्वारा सक्षम बनाया जाता है, के द्वारा पूंजीवादी व्यवस्था की कार्यप्रणाली को उजागर किया और यह बताया कि श्रमिक का शोषण कैसे इसमें अन्तर्निहित है। यदि श्रमिक को उसके श्रम का पूरा मूल्य दिया जाए तो पूंजीपति को कोई मुनाफा नहीं होगा।

अब हम दूसरे पहलू पर आते हैं जो मार्क्स और एंगेल्स द्वारा उजागर किया गया है : जो संकट अनिवार्य रूप से समय-समय पर सामने आए क्योंकि विरोधाभासों ने इसके संतुलन को बिगाड़ दिया, विशेषरूप से पूंजी और बाजार की अन्तहीन आवश्यकताएं, जिनके बिना मुनाफा एक स्तर पर रहेगा लेकिन उसका विस्तार नहीं होगा। जबकि पूंजीवाद ने अधिक से अधिक उत्पादन किया, लोग अधिक से अधिक गरीब हो गये और उत्पादित होने वाली सभी वस्तुओं को खरीदने में असमर्थ थे। यह उस ओर संकेत करता है जिसे मार्क्स ने अत्यधिक उत्पादन और अल्प-उपभोग के संकट के रूप में देखा था और पूँजीपति श्रमिकों के हितों की असंगतता को रेखांकित किया था। इसे बेचने की जरूरत थी लेकिन व्यवस्था

ने लोगों को वह खरीदने से रोक दिया जो उन्हें चाहिए था। अधिकतम मुनाफा बनाए रखने के लिए पूंजीपति श्रमिक को जितना संभव हो उतना कम भुगतान करता है लेकिन उसे अपने उत्पादों को बेचने के लिए यह जरूरी है कि श्रमिकों के पास अधिक पैसा हो यानि उसे उन्हें अधिक भुगतान करने की आवश्यकता है क्योंकि उनके पास आय का कोई अन्य स्रोत नहीं है। जाहिर है वह एक संतुलन बनाकर नहीं रख सकता जो सर्वोत्तम स्तर पर दोनों का ख्याल रख सके। कुछ समय के लिए, संकटों को अस्थाई रूप से नये बाजारों की तलाश करके निपटा जा सकता है। उदाहरण के लिए उपनिवेश प्राप्त करके (सस्ते कच्चे माल प्राप्त करने या उत्पादित माल बेचने के लिए) या बाजारों के पुनर्विभाजन के लिए युद्ध छेड़कर या कुछ कल्याणकारी कदमों द्वारा श्रमिकों को तुष्ट करके। लेकिन कोई स्थाई समाधान नहीं है जिसके द्वारा पूंजीपति (संपत्ति के मालिक और संसाधनों के धारक) और वेतनभोगी श्रमिकों (जिनके पास खोने के लिए जंजीरों के अलावा कुछ नहीं है) के बीच मूल अन्तर्विरोध का निपटारा हो सके। इसलिए प्रचुरता के मध्य गरीबी थी जो पूंजीवाद की दूसरी विशेषता है (और सकल असमानताओं वाले किसी भी वर्ग समाज की भी)।

बेहतर समझने के लिए हमें एक तीसरा पहलू देखना होगा जो पूंजीवाद के लिए आवश्यक है : व्यवस्था के बाहर से पूंजीवाद में आरंभिक और निरंतर निवेश जिनमें से कुछ का वर्णन ऊपर किया गया है। मार्क्सवादियों ने खुद से दो सवाल पूछे : आरंभिक पूंजी और निजी संपत्ति कहां से आई? व्यवस्था ने हर संकट से निबटने के लिए निवेश की पुनः पूर्ति और वृद्धि को कैसे अनुमति दी? मार्क्स और एंगेल्स ने इन पहलुओं पर काफी लिखा। औपनिवेशिक प्रणाली की क्रूर लूट और डकैती उनके लेखन में सदैव रही। उदाहरण के लिए न्यूयार्क डेली ट्रिब्यून में मार्क्स द्वारा भारत पर प्रसिद्ध लेख जिसने इंग्लैंड की दिशा में धन की सुव्यवस्थित निकासी दिखाई, और इसने बाद के शोधों के अनुसार इंग्लैंड, की औद्योगिक क्रांति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह बात अन्य उन्नत यूरोपीय देशों के उपनिवेशों के लिए भी सच थी। आपने इस बारे में उपनिवेशवाद पर कुछ पढ़ा होगा।

मार्क्सवाद यह भी बताता है कि कैसे छोटे कारीगरों की अर्थव्यवस्था और कृषि, भूमि और कृषक अर्थव्यवस्था का पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में क्या स्थान है? कृषि और विनिर्माण के पृथक्करण, कृषि के अन्दर छोटी कृषक अर्थव्यवस्थाओं का बड़े पैमाने की कृषि में रूपान्तरण (जैसा कि इंग्लैंड में बाड़बन्दी इसका एक उदाहरण है), बाजार सम्बन्ध और विभिन्न प्रकार के लगान (फसलों पर भुगतान से लेकर जमीन के किराये आदि ने कृषि में पूंजीवाद के उद्‌भव को आकार दिया और कृषि अर्थव्यवस्थाओं को पूंजीवादी अर्थव्यवस्थाओं में बदल दिया। कच्चे माल, उद्योग निर्मित वस्तुओं और कृषि उत्पादों के बाजार के माध्यम से, छोटे किसानों द्वारा भूमि के स्वामित्व के गँवा देने से और बड़े किसानों द्वारा बाजार के लिए उत्पादन और बड़े जमींदारों के लगान के माध्यम से कृषि व्यवस्था और ग्रामीण समाज सामान्य रूप से पूंजीवाद का हिस्सा बन गये। इस प्रक्रिया ने पूंजीवादी उद्योग के लिए पूंजी के प्राथमिक या आदिम संचय के एक पहलू का गठन किया (प्राथमिक या आदिम संचय से अभिप्राय उस आरंभिक धन से है जिसे पूंजी में परिवर्तित किया गया था)।

उपनिवेशों और उन उपनिवेशों में, जो मुख्य रूप से कृषि आश्रित थे लेकिन छोटे कारीगर आधारित उत्पादन में समृद्ध थे, वहाँ अनौद्योकरण के कारण संपदा का स्थानान्तरण हुआ जो पूंजीवाद के लिए प्राथमिक या आदिम संचय का दूसरा स्रोत बना।

मार्क्स और एंगेल्स ने स्पष्ट रूप से कहा कि संपदा तभी पूंजी बनती है जब इसे अधिक संपदा या मुनाफा कमाने के लिए निवेश में परिवर्तित किया जाता है। और जब जिसका उत्पादन किया जाता है वह एक 'वस्तु' बन जाती है जिसे मुनाफे के लिए बेचा जा सकता है। बाजार पूंजीवाद और 'श्रम शक्ति' का महत्वपूर्ण पहलू बन गया या श्रमिक का काम स्वयं जीवित रहने या आजीविका के लिए बेचे जाने वाली वस्तु बन गया। प्रकृति के शोषण

में पृथ्वी के संसाधन (खनिज, जल, जंगल) सब कुछ वस्तु बन गये। मार्क्स के अनुसार, तबः 'यह हमेशा उत्पादन के उपकरणों के मालिकों और वास्तविक उत्पादकों के बीच सम्बन्ध होता है कि जिससे हम आन्तरिक रहस्य, पूरी संरचना के गोपनीय आधार को पा सकते है' (कोलोवस्की में उद्धरित पृष्ठ, 199)।

और यह सम्बंध उन्होंने बताया कि मजदूरी में सुधार या उच्च जीवन स्तर के बावजूद बदलता नहीं है : आवश्यक सम्बन्ध शोषण आधारित रहता है और जीवन के सभी पहलूओं, राजनैतिक और सांस्कृतिक से व्यक्तिगत और यहाँ तक कि परिवारों के भीतर भी व्याप्त रहता है। महिलाओं की स्थिति, समाज और परिवार के भीतर लैंगिक सम्बन्ध, परिवारों के बाहर या भीतर दोनों में उनके नियन्त्रण का अभाव या असमान होना, और समाज और राजनीति में उनकी भूमिका इस पर निर्भर थी कि कैसे युगों से परिवार और समाज का विकास हुआ था। इन विशेषताओं में से कई के रूप तब से इतिहास के माध्यम से बदल गये हैं, और इनका समय-समय पर राजनैतिक नेताओं और शिक्षाविदों द्वारा अध्ययन किया गया है, लेकिन जैसा कि प्रमुख मार्क्सवादी विचारकों ने कहा है इनकी आवश्यक विशेषताएं सभी चरणों में बनी रहती हैं।

2.3.3 क्रांति का सिद्धांत

इतिहास के माध्यम से आर्थिक प्रणालियों के विश्लेषण से, मार्क्स और एंगेल्स ने यह राजनीतिक निष्कर्ष निकाला कि पूंजीवाद को उखाड़ फेंकना आवश्यक और अपरिहार्य है, और दूसरा निष्कर्ष यह था कि यह कुछ ऐसा है जो अपने आप नहीं होगा बल्कि ऐसा करने के लिए लोगों को क्रांति करने की आवश्यकता होगी।

इसमें जो वर्ग प्रमुख भूमिका निभायेगा वह श्रमिक वर्ग होगा। जैसे पूंजीवाद विकसित होता है वैसे ही उत्पादन चरित्र में सामाजिक हो जाता है यानि सामूहिक (एक श्रमिक पूरे उत्पाद का उत्पादन नहीं करता है, वह एक कारखाने के भीतर केवल एक या दो कार्य करता है) और इससे होने वाला मुनाफा व्यक्तिगत होता है यानि मालिक का। श्रमिकों के वर्ग के पास उत्पादन के साधनों में निजी संपत्ति सहित इस प्रणाली के रख रखाव में कोई हिस्सेदारी नहीं है क्योंकि उसके पास काम करने की क्षमता के अलावा कुछ भी नहीं है और एक ऐसी प्रणाली को बनाए रखने में उसकी कोई दिलचस्पी नहीं होती जो उसे सार्थक जीवन जीने से रोकती है और जिसमें वह पूरे दिन के लिए जो करता है वह उससे स्वयं को नहीं बल्कि उस पूंजीपति को समृद्ध करता है जिसे उसने कभी देखा भी नहीं होगा। केवल श्रमिकों की सामूहिक लड़ाई से काम के घंटे कम हो सकते हैं और कार्य परिस्थितियाँ बेहतर हो सकती हैं। जीवन के उच्च स्तर, अधिकांश अवकाश और सांस्कृतिक और शैक्षिक सुविधाओं तक उसकी पहुंच हो सकती है। श्रमिकों की मुक्ति से समाज के अन्य सभी वर्गों की मुक्ति संभव हो जाएगी। मार्क्स और एंगेल्स ने कुछ हद तक किसानों, महिलाओं, छोटे पूंजीपतियों, बड़े पूंजीपतियों, जमींदारों आदि के संभावित व्यवहार का, उनके पूंजीवादी व्यवस्था में भूमिका और स्थान का विश्लेषण किया और यह रेखांकित किया कि कौन लोग इसका विरोध करेंगे और कौन इस मार्ग का हिस्सा होंगे। इस तरह पूंजीवाद ने उन तत्वों की वृद्धि के लिए परिस्थितियों का निर्माण किया जो इसे उखाड़ सकती थी या उखाड़ेंगी।

मार्क्स ने सवाल पूछा - क्या पूंजीपति स्वेच्छा से अपने मुनाफे को छोड़ देंगे? इतिहास दर्शाता है कि थोड़े दान के अलावा, ऐसा नहीं हुआ, और यह कि जो भी मेहनतकश लोगों को मिला था वह लड़कर और संघर्ष से। हड़ताल, सामूहिक सौदेबाजी और यूनियनों के माध्यमों से एक सुधार जीता जा सकता था, लेकिन शोषण के सम्पूर्ण आधार को पलटने के

लिए क्रांति से कम में काम नहीं चलने वाला था। जैसे-जैसे सम्पदा कम हाथों में केन्द्रित होती गई (पूंजीवाद के तहत एक प्रवृति) और अधिक से अधिक लोगों को तकलीफें सहनी पड़ी, वैसे-वैसे मध्यम वर्ग और किसान वर्ग सत्तारूढ़ व्यवस्था के खिलाफ अपनी आवाज और आन्दोलनों को बढ़ायेंगे, लेकिन अगर उन्हें महसूस होगा कि लड़ाई बहुत दूर जा रही है तो वह पीछे हट जायेंगे क्योंकि लड़ाई सरकारों के खिलाफ, न्यायिक प्रणालियों के खिलाफ, असमान सामाजिक मानदंडों और पुनाने सोच की तरीकों के खिलाफ होगी जो मुनाफाखोर शासक वर्गों के शासन को और असमानता की इमारत को बरकरार रखने में मदद करते हैं।

मार्क्स के जीवन काल में पहली बार इस तरह के व्यापक आन्दोलनों का उदय हुआ था। सबसे पहले 1848 की क्रांति थी जिसने मार्क्स को मजदूरों की अग्रणी भूमिका और पूंजीपति वर्ग के 'विश्वासघात' के बारे में सोचने को मजबूर किया जो स्थापित सरकारों के समर्थन में आया। भले ही उनमें कुछ निरकुंश शासन थे और पूंजीपति वर्ग द्वारा माँगें जाने वाले प्रजातांत्रिक संविधानों को अस्वीकार कर रहे थे। कम्युनिस्ट मेनिफेस्टों ने श्रमिकों के लिए इस अनुभव को समझाया और उनके बीच समाजवाद के लिए समर्थन को मजबूत किया जिससे पूरे यूरोप में श्रमिक वर्ग संगठनों और दलों का गठन हुआ। श्रमिक वर्ग द्वारा राज्य की सत्ता पर कब्जा करने का पहला प्रयास 1871 में पेरिस में किया गया था। पहली श्रमिकों की सरकार के बचाव में सैंकड़ों श्रमिक मारे गये और श्रमिकों की हार हुई। कुछ और सबक सीखे गये, अनिवार्य रूप से यह कि पूंजीवादी राज्य की मशीनरी को नष्ट करना और एक नये समाजवादी राज्य का निर्माण है। समाजवाद और समाजवादी संगठनों के उदय के बाद महिला संगठन और महिला मुक्ति एक लोकप्रिय आंदोलन बन गया। वास्तव में महिलाओं का पहला जनसंगठन समाजवादियों द्वारा शुरू किया गया था। कामकाजी महिलाओं के मुद्दों को भी सबसे पहले उनके द्वारा उठाया गया; जब उन्होंने महिलाओं के मताधिकार अभियानों के लिए मुख्य प्रेरणा और समर्थन का अधिकार बनाया।

2.3.4 मार्क्सवाद का प्रभाव

जबकि मार्क्स और एंगेल्स ने विस्तार से पूंजीवादी समाज के बारे में लिखा था, लेकिन उन्होंने एक प्रकार का खाका ही प्रस्तुत किया था कि व्यवहार में समाजवाद कैसा होगा क्योंकि उनके जीवन काल में कोई समाजवादी समाज अस्तित्व में नहीं था।

क) पूंजीवाद और उसके कार्यप्रणाली के अध्ययन से उन्होंने यह समझ हासिल की कि राजनैतिक और कानूनी अधिकारों को अर्थव्यवस्था और समाज के दायरे में विस्तारित करना आवश्यक था : सामाजिक और आर्थिक समानता के बिना कोई वास्तविक समानता नहीं हो सकती थी।

ख) एक समाजवादी समाज इस प्रकार का वर्गहीन समाज होगा जिसके उत्पादन और संसाधनों का स्वामित्व लोगों के राज्य के पास होगा और सभी के लिए स्वास्थ्य, शिक्षा और संस्कृति पर समान रूप से और पर्याप्त रूप से सार्वजनिक व्यय होगा और लैंगिक समानता का आश्वासन होगा।

ग) राज्य संरचना और राज्य मशीनरी को उखाड़ फेंकना आवश्यक था क्योंकि पुरानी मशीनरी पुराने शासक वर्गों के हाथों में होगी और क्रांति को पराजित कर देगी।

घ) मजदूर वर्ग की कुछ समय के लिए तानाशाही आवश्यक थी जिसने नये समाजवादी राज्य की नींव रखी जा सके और आम जनता, मेहनतकशों के पक्ष में नीतियों को तैयार करके उन्हें लागू करवाया जा सके। यह वास्तव में पहले के पूंजीवादी शासनों

की तुलना में अधिक लोकतांत्रिक होगा क्योंकि यह पूर्व शासक वर्गों के अल्पसंख्यक पर बहुसंख्यक का वास्तविक शासन होगा।

ङ) उन्होंने मेहनतकश लोगों के संगठनों के निर्माण पर जोर दिया और पहले इंटरनेशनल वर्किंग मेन्स एसोसियेशन का गठन किया और जिसने यह माना कि 'दुनिया के मजदूरों एक हो' के नारे के साथ हर जगह कामगारों के हित समान थे।

मार्क्सवाद का अर्थ ज्योतिष की भविष्यवाणी की तरह नहीं था, लेकिन इसके विपरीत इसने उन हितों को उजागर किया जो समाजवाद के लिए एक अभियान का निर्माण करेंगे : वे सफल होंगे या नहीं यह संघर्षों की प्रकृति और उनके परिणाम पर निर्भर करेगा। लोग ही इतिहास बनाते है; भाग्य नहीं। मानव जीवन में प्रकृति की तुलना में बहुत अधिक चर राशियाँ थी और इतिहास सामाजिक विकास की सामान्य प्रवृत्तियों के भीतर इन चर राशियों के लिए खुला था। उन्होंने समाजवादी समाजों के भीतर संघर्ष और बहस की कल्पना की, जो निर्माण की दिशा में काम करेगा जबकि समाजवादी समाज, शोषण से मुक्त 'प्रत्येक को उसके काम के अनुसार' को संभव बनाऐगा, विकास के उच्च स्तर पर साम्यवादी समाज 'प्रत्येक को अपनी जरूरत के अनुसार' को संभव बना सकता है; जहाँ लोग साझा करने के लिए सन्तुष्ट होंगे और हरेक को जो चाहिए वह उसे लेने देंगे और अधिक के लिए व्यक्तिगत रूप से लालची नहीं होंगे। उन्होंने अवकाश और संस्कृति के लिए अधिक समय और छोटे कार्यदिवस की कल्पना की। उन्होंने एक अधिक मानवीय चेतना की कल्पना की। उन्होंने यह भी सोचा कि क्या किसान वर्ग उन समाजों में एक बड़ी भूमिका निभायेगा जहाँ उद्योग एक छोटा क्षेत्र था और क्या पहले उन देशों में क्रांति नहीं हो सकती है जहाँ पूंजीवाद सबसे अधिक विकसित हुआ था और परिणामस्वरूप पूंजीपति वर्ग अधिक मजबूत था। एक कमजोर पूंजीपति वर्ग और मजदूर वर्ग और किसान वर्ग के बीच एक अलग तरह का गठजोड़ बेहतर परिणाम दे सकता है। वास्तव में वहीं हुआ भी।

मजदूर वर्ग द्वारा पहली सफल क्रांति जर्मनी या इंग्लैंड की बजाए 1917 रूस में हुई थी। न केवल नये सोवियत राज्य ने उद्योग में उत्पादन और संसाधनों के साधनों में निजी संपत्ति को समाप्त कर दिया, बल्कि इसने किसान वर्ग के साथ गठबंधन में सभी भूमियों का राष्ट्रीयकरण भी कर दिया। इसने एक नया राज्य बनाया और समाजवादी लोकतंत्र की स्थापना की। इस पहले समाजवादी अनुभव की कहानी एक बाद की इकाई की विषय वस्तु होगी।

2.4 सारांश

औद्योगीकरण और पूंजीवादी समाज के तात्कालिक संदर्भ में समाजवादी विचार उभरे और उनके अभिव्यक्ति और सामाजिक रूपान्तरण के तरीकों की वकालत में विविधता थी। अनिवार्य रूप से, दो रूझान थे, पहला जिन लोगों ने सोचा था कि पूंजीवाद के रूपान्तरण के माध्यम से और दूरगामी सुधार से समाजवाद धीरे-धीरे उभर सकता है। दूसरे अन्य लोगों ने तर्क दिया कि पूंजीवादी शासनों को क्रांति द्वारा उखाड़ फेंकना समाजवाद के लिए एक आवश्यक पूर्व-शर्त थी।

उभरते हुए पूंजीवाद के आरंभिक वर्षों में, समाजवादी विचारों की प्रमुख प्रवृत्ति उन लोगों की थी जिन्हें 'काल्पनिक' कहा जाता था क्योंकि उन्हें लगता था कि समाजवाद के लिए हृदय परिवर्तन और सुधार पर्याप्त है। इसके विपरीत मार्क्स ने इस बात पर जोर दिया कि पूंजीवाद के अन्तर्विरोध व्यवस्था मे अन्तर्निहित थे और वे शोषण की मूल जड़ों के मेल-मिलाप या समाधान की अनुमति नहीं देंगे। कम्युनिस्ट मेनिफेस्टो और क्रांति पर बल देने से समाजवादी विचार को एक नया आयाम मिला। इसी प्रकार शोषण की जड़ों को

उजागर करने से और पूंजीवाद की रक्षा या इसके प्रभाव में विभिन्न वर्गों के स्थान की व्याख्या से भी इसे नया आयाम मिला।

महिलाओं की मुक्ति पर बल देने से और कई तरह के लेखन के उपनिवेशवाद विरोधी रूझान और पूंजीवाद के विश्व व्यवस्था के रूप में मान्यता देना और अन्तर्राष्ट्रीयवाद पर बल देना और श्रमिक संगठनों के निर्माण और राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलनों के निर्माण में महत्वपूर्ण थे।

सबसे महत्वपूर्ण मार्क्सवाद ने एक गतिहीन सिद्धांत की बजाए विश्लेषण के एक उपकरण के रूप में लोकप्रियता हासिल की और दुनियां भर के समाजों के विश्लेषण और बदलावों के मार्क्सवादी वैचारिक परिप्रेक्ष्य को लागू करने में कई राजनैतिक नेताओं और बुद्धिजीवियों ने योगदान दिया। यह बीसवीं शताब्दी में क्रांतियों के लिए एक वैचारिक वाहन बन गया, जिसकी शुरुआत 1917 में रूसी साम्राज्य से हुई और जो पूर्वी यूरोप, चीन और वियतनाम से क्यूबा तक और उपनिवेशों की मुक्ति तक फैली। समाजवाद और समाजवादी विचार आज भी असमान और अन्याय पूर्ण दुनिया में एक प्रेरणा बने हुए हैं क्योंकि पृथ्वी के संसाधनों तक सभी की पहुंच बढ़ने की बजाए उत्पादन वृद्धि और अधिक बहिष्करण को जन्म दे रही है।

बोध प्रश्न 2

1) मार्क्सवाद के प्रमुख सिद्धांतों को लगभग सौ शब्दों में स्पष्ट करें।

....

....

....

....

....

2) क्रांति के मार्क्सवादी सिद्धान्त की चर्चा कीजिए।

....

....

....

....

....

2.5 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) भाग 2.2 देखें।

2) उपभाग 2.2.1 देखें।

बोध प्रश्न 2

1) भाग 2.3 देखें।

2) उपभाग 2.3.3 देखें।